Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 11, November-2019, ISSN 2230-7540

बिहार में वैश्विकरण के साकारात्मक एव नाकारात्मक प्रभाव

Dr. Soni Kumari*

PhD (Politic Science) B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur

सार – *दैनिक जीवन में उपयोग होने वाली सामग्रियों उपकरणों आदि पर हमारा ध्यानाकर्षण स्वाभाविक है। इन पर दृष्टि डालने पर यह जानने की इक्छा प्रबल हो जाती है , की अमुक वस्तु, उपकरण या , विचार का जन्म कब कहा और कैसे हुआ था।और ये हमारे जीवन का हिस्सा कैसे बन गए।ऐसी चीजें है,टेलीविजन, रेफ्रिजरेटर, बाइक, नाइलॉन के उपकरण आदि।उनकी उत्पत्ति एवम विकास की कहानी हमें चौकाती है,किन्तु यह सर्वविदित है , की हमारी दिनचर्या में शामिल वस्तुओं, उपकरण आदि का हमारे जीवन का हिस्सा होना कुछ न होकर वैश्विकरण के साकारात्मक और नाकारात्मक प्रभाव का उदाहरण मात्र है।परिभाषा विशेषता का आधार पर न सही लेकिन उनके व्यवहारिक रूप से हम सब वैश्विकरण के सकारात्मक और नाकारात्मक प्रभाव से परिचित है।*

----------X----------

प्रस्तावना:

वैश्विकरण का शाब्दिक अर्थ स्थानीय क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्व स्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया है।ऐसे एक ऐसी प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए प्रयुक्त किया जा जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते है तथा एक साथ कार्य करते है यह प्रक्रिया आर्थिक तकनीकी समाजिक और राजनीतिक ताकतों का एक सयोजन हैं।[1] वैश्वीकरण ने समूचे विश्व को एक ग्लोबल विलेज का रूप प्रदान किया है। [2] यह भी मान्यता है कि वैश्वीकरण एक ऐसा नया संस्करण है जो उसे अपेक्षाकृत नए ग्लोबल करने में प्रस्तुत कर लोगी को भर्मित करता है।"रजनी कोठारी इसे कॉरपोरेट पूँजीवाद की संज्ञा भी देते है"।[3]

वैश्विकरण कोई नए अवधारणा नही है ,न ही इसकी प्रक्रिया अचानक आ धमकी है । मानव इतिहास के आरंभ से ही वैश्वीकरण की प्रक्रिया चली आ रही है।और वह समय के साथ त्वरित होती वे है । फॉर इस्टर्न इकोनॉमी रिव्यू के पुर्व संपादक नयन चंदा का मानना है कि बोरोबुदुर मंदिर का भी निर्माण भूमंडलीकरण की प्रक्रिया के 840ईसवी मेंइसका प्रमाण है। सुदूर भारत से लेकर बौद्ध धर्म के प्रवर्तक की शिक्षाओं को हजारों कलाकारो मजदूरों ने मंदिर की दीवारों पर उकेरा जिसे भूमंडलीकरण या वैश्वीकरण कहते है।[4]

"वैश्वीकरण के उद्देश्य विश्व की सतत गतिशील अर्थव्यवस्था के साथ भारतीय या बिहार की अर्थव्यवस्था का तालमेल बैठना है।यह स्वभाविक भी है कि गतिमान सामाजिक आर्थिक राजनीतिक एवं संस्कृतिक संस्कार से कोई भी देश अधिक समय तक अपने को पृथक नही रख सकता क्योकि वह पिछड़ेपन का घोतक है। वैश्वीकरण के परिणाम स्वरूप भारत मे विदेशी पूँजी निवेश तकनीकि का विकास निर्यात में वृद्धि एवं रोजगार के अवसरों उपलब्धता के साथ गरीबी की दर में कमी लाना । ज्ञान विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी संचार माध्यमों से शिक्षा, संस्कृति के मामले में भारत को आत्मनिर्भर बनाने का सामूहिक प्रयास के रूप में वैश्विकरण की व्यवस्था को अपनाना है ।"[5]

महत्व:-

जहा तक बिहार में वैश्वीकरण के साकारात्मक और नाकारात्मकता का प्रश्न है तो वैश्विकरण ने दुनिया को बहुत ही छोटा कर दिया है।इसके सामाजिक, आर्थिक,राजनीतिक, सांस्कृतिक, शिक्षा ,मनोरंजन, सूचना, तकनीकी ,आदि विभिन्न क्षेत्रों को प्राभावित किया है। वैश्विकरण के सकारात्मक प्रभाव का असर की बिहार जैसा पिछडा राज्य में प्रत्यक्ष निवेश होने से काफी हद तक पूंजी का समाधान संभव होता जा रहा है ।विज्ञान प्रौधौगिकी और प्रबंधन का ज्ञान पहले के किसी भी अवधि से अधिक तेज गति से बढ़ रहा है। बिहार मे उत्पादन क्षमता और समृद्धि पर भी अनुकूल प्रभाव

www.ignited.in

पड़ रहा है। बिहार ने उत्पादों के लिए बाजार की उपलब्धता भी बढ़ रही है। वैश्विकरण ने प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दिया है,घरेलू उद्योगों की कार्य कुशलता बढ़ी है।इससे अर्थव्यवस्था के खुलने से विभिन्न राज्यों के निवासियों के बीच अर्थशास्त्रीये समन्वय बढ़ने के साथ साथ सामाजिक विकास के क्षेत्रों, में शिक्षा स्वास्थ्य जैसी सुविधाओं का विस्तार हो रहा है।

बिहार में वैश्विकरण के सकारात्मक प्रभाव का असर है कि ग्लोबलाइजेशन ने अंतरराज्यीय व्यपार के लिये राजकीय सीमाओं को खोल दिया है,वैश्विक प्रतिस्पर्धा को बढ़ाया है।इससे मानव विकास की अपार संभावनाये उभर कर सामने आए है।वैश्विकरण कि प्रक्रिया से उत्पादन के लागत में कमी होती है ।जिससे वस्तुओं एवम सेवाओ की कीमत में कमी होती है ।जिसका लाभ उपभोक्ता वर्ग को हो रहा है।जिस प्रकृति ने बिहार में ऊर्वर भूमि प्रदान की है तो बाढ़ और सुखाड़ जैसी प्राकृतिक आपदा भी दी है।मास्टर ड्रेनेज योजना फसल बोने के तरीकों में परिवर्तन, भूमिगत जल संसाधन का संरक्षण कर विपदाओं को वरदान में बदला जा सकता है।वैश्विकरण के बढ़ते प्रभाव का असर है ,जो बिहार कल तक कृषि मे उतना पैदावार नहीं कर सकती थी जितनी हमारी खपत थी वही, बिहार आज आवश्कता से अधिक उत्पादन को खपाने के लिए विचार कर रही है।बिहार में फसल तथा डेहरी उत्पादन की वस्तुओं को दिल्ली तथा अन्य राज्यों में बेचा जा रहा है।

अगर देखा जाए तो" बिहार अपने आप मे एक पूरा बाज़ार है।इसको समाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक प्रशासनिक व्यवस्था का पुराना अनुभव है। गाँव और कृषि के विकास से होकर बिहार की तरक्की का रास्ता प्रशस्त होता है ।बिहार समृद्ध किसान और उन्नत कृषि के बल पर अतीत में सभ्यता के शिखर पर आसीन हुआ था।"[6]

वैश्विकरण ने ज्ञान आधारित उद्योगों के साथ ही सेवा क्षेत्र में भी अनेक अवसरों के द्वार खोल दिये है। इसका सदुपयोग होने से राज्य कोष में अपार वृद्धि होगी।यह तभी संभव है जब प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था प्रतियोगात्मक होगी।अभी भी वैश्विकरण का पूरा लाभ बिहार को नहीं मिल पाया है जेनेवा के पूर्व निदेशक इस्टीट्यूट ऑफ हवमन डेवलपमेंट नई दिल्ली के प्रोफेसर गौरी रॉस के अनुसार बिहार भी अर्थव्यवस्था में स्थान बना सकता है। बिहार के पास 21वी शताब्दी की सबसे बड़ी संपदा पानी का अकूत भंडार है ।वहीं राज्य की शिक्षा व्यवस्था को विश्व बाजार के अनुरूप विकसित करना होगा।वास्तव में प्रतियोगात्मक शिक्षा तथा सर्वव्यापी शिक्षा राज्य की विकास की गति को बढ़ाने में समान्य रूप से एक दूसरे के पूरक है।

बिहार में वैश्विकरण के सकारात्मक प्रभाव का असर है कि" भारत की जीडीपी0में बिहार 14 वे नम्बर पर हैं।बिहार का जीडीपी02016-2017में बृद्धि 10.3%रही है। बिहार में वैश्विकरण का सकारात्मक प्रभाव का असर है कि बिहार आर्थिक विकास के साथ-साथ मानव विकास एजेंडों को जोरदार रूप से रेखांकित किया गया है, जिन्हें निम्न बिंदुओं में प्रदर्शित किया गया है:--

(१) अर्थिक हल युवाओं के बल

(२) आरक्षित रोजगार महिलाओ के अधिकार ।

(३) हर घर बिजली लगातार।

(४) हर घर नल का जल ।

(५) घर तक पककी गली।

(६) शौचालय निर्माण घर का सम्मान।

(७) अवसर बढे आगे पढ़ें।"[7]

इस निश्चय को प्राप्त करने की दिशा में सरकार की योजनाओं के तहत अपराध से महिला सुरक्षा के लिये बिहार में सुरक्षित शहर निगरानी योजना के तहत स्मार्ट गवर्नेस और ई गवर्नेस के जरिये लोगो को अच्छी सेवा प्रदान की जा रही है ।इसे सिविल प्रशासन, पुलिस प्रशासन और संस्थागत प्रशासन में भी इसे लागू कर के पारदर्शी प्रशासन विकसित की जा रही है।वैश्विकरण के जारिये शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच की खाई को पाट कर अर्थव्यवस्था को सुदृण किया जा रहा है स्टूडेंट्स क्रेडिट कार्ड योजना छात्रवृत्ति एवम मुफ्त वाई फाई योजना आदि को बढ़ावा दिया जा रहा है।

बिहार में वैश्विकरण के बढ़ते सकारात्मक प्रभाव का असर है कि" पूर्वी चम्पारण के हरसिद्धि और बाका प्रखंड में एचपीएसीएल गैस वाटलिंग प्लांट लगाया गया।बिहार में यह पांचवा वाटलिंग प्लांट है।वही इधर बिहार में केंद्रीय विश्वविद्यालय का खुलना भी ग्लोबलाइजेशन के बढ़ते सकारात्मक प्रभाव को दर्शाता है।"[8]

'ग्लोबल फॉर रिसर्जेंट बिहार'का उदघाटन करते हुए महामहिम अब्दुलकलाम ने कहा था कि "यह इंतजार करने का समय नही है। हमे 2015 से पहले ही बिहार को विकसित राज्य बनाना होगा।"[9] इस बात से साफ होता है कि

www.ignited.in

महामहिम राष्ट्पति को यह अहसास हो गया था कि बिहार में अपार संभावनाएं है ,जरूरत सिर्फ दृण इक्छा शक्ति की है।

बिहार में वैश्विकरण का नाकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिल रहा है ।वैश्विकरण के दौरान मजदूर किसानो एवम खेतिहर मजदूरों की ज़िंदगी बदतर हो गई हैं।अस्थायीकरण ठेकेदारी काम के घंटो में बढ़ोतरी और न्यूनतम मजदूरी लागू नही होना मजदूरो के लिए चिंता का विषय है।आयात नियमों में बदलाव से किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर हो गए है। खेती पर संकट बढ़ा है। वैश्विकरण के कारण आज बिहार की आबादी के बड़े हिस्से को सामान्य आवश्यकता की चीजें भी उपलब्ध नहीं हो पा रही है।भूमंडलीकरण की वजह से बिहार में कुछ गिने चुने लोगों की आमदनी में निरंतर बृद्धि हो रही है ,तो दूसरी तरफ़ गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों की संख्या में निरंतर बृद्धि हो रही है । यह आय की असमानता की तरफ संकेत दे रहा है।

वैश्विकरण ने बिहार के बाजार को भी प्रभावित किया हौ। जिससे अमीरी और गरीबी की खाई बढ़ रही है।क्योंकि बाजार में उत्पातो की कमी नही है लेकिन उसे खरीदने की शक्ति भी हर किसी के पास नही है।स्थानीय लघु उधोग आम आदमी की औसतन आय को बढ़ाने के लिए जुटे है, लेकिन वह बहुराष्ट्रीय कंपनियों के साथ प्रतिस्पर्धा नही कर पा रहे है।जिसके परिणाम स्वरूप बिहार के लघु उधोग का आस्तित्व ख़तरे में है ।

"वैश्विकरण ने एक ओर जहां गरीब बज़ारतंत्र को प्रभावित किया है।तो दूसरी ओर व्यक्ति समाज ,संस्कृति,सभ्यता ओर भाषा आदि सूचनाओं को भी प्रभावित किया है। वैश्विकरण के कारण राज्यो के बीच की सीमाएं सहयोग के लिये पारगामी हो रही है। अंतराज्यीय व्यवसाय और व्यापार में दृष्टि के साथ अन्य देशों में प्रवासन की प्रक्रिया भी तीव्र हुई है। अर्थतंत्र अब अतिरिक्त अन्य भाषाओं के प्रयोग के अवसर बढ़ रहे है।इस तरह के बदलते संदर्भ में भाषा और सांस्कृतिक के अनेक अंतराष्ट्रीय आयाम उभर रहे है। जिनकी ओर ध्यान देना आवश्यक है।"[10]

वैश्विकरण बिहार की संस्कृति को के प्रकार से प्रभावित किया है। “बिहार प्राचीन काल से सांस्कृतिक प्रभावों के प्रति खुला दृष्टिकोण अपनाए हुए है,और इसी के फलस्वरूप वह संस्कृतिक दृष्टि में समृद्ध होता रहा है।लेकिन पिछले कुछ दशकों से बड़े बड़े सांस्कृतिक परिवर्तन हुए है जिससे डर पैदा हो गया है, की हमारी स्थानीय सांस्कृतिक परम्पराए पीछे न रह जाए।"[11]

आज संस्कृति के भू स्थानीकरण की प्रवृति बढती जा रही है। यह पूर्णतः स्वतः प्रवर्तित नही होता है। और न ही भूमंडलीकरण के वाणिज्य हितों से इसकी पूरी तरह संबंध विच्छेद ही किया जा सकता है ।गहराते भूमंडलीकरण ने दायरे के इस टकरावों को खत्म कर दिया है ।एक नया अंतर्विरोध विश्व पूँजीवाद का लक्षण बन गया है।

वास्तव में वैश्विकरण की जो नीति बिहार में 1991अपने गए इसका कोई ठोस फायदा बिहार की आम जनता को नही मिला है।फिर भी आम जनता विदेशी पूंजी के उम्मीद में वैश्विकरण का खुलकर जोश -खरोश से विरोध नही कर पा रही है।बिहार में वैश्विकरण के बढ़ते नकारात्मक प्रभाव के संदर्भ में डॉ प्रधान लिखते है---"बिहार जैसे गरीब राज्यों के विकास रोजगार वृद्धि तथा गरीबी उन्मूलन के लिए जरूरी है कि पहला कदम इस महंगी और निकम्मी प्रशासनिक प्रणाली के बदले गांधी द्वारा विस्तृत वर्णित पंचायती राज्य संरचना को अपना ले तो हम आर्थिक गुलामी से दूर हो जायेगे और लोग क्षेत्रीय जरूरतों और उपलब्ध संसाधनों के मधेनज़र विकास से जनता को जोड़ पाएंगे यही बिहार के विकास का स्वदेशी रास्ता होगा।"[12]

बिहार में वैश्विकरण के बढ़ते नकारात्मक प्रभाव के संदर्भ मे देखा जाए तो "बिहार से प्रतिभा का पलायन का एक प्रमुख कारण यह भी है।आज ग्लोबलाइजेशन के कारण दुनिया एक मुट्ठी में सिमटगई है।ग्लोबलाइजेशन के चलते विद्यार्थियों को किस देश मे सबसे अच्छी शिक्षा तथा रोजगार की प्राप्ति हो सकती है।इसकी सूचना असानी से प्राप्त हो जाती हैं।और विद्यार्थी सदेश में चले जाते है।इस प्रकार ग्लोबलाइजेशन के चलते भी बिहार से प्रतिभाओं का पलायन होता है।"[13]

बिहार में वैश्विकरण के साइड इफेक्ट्स भी देखने को मिल रहा है। अमीर और गरीब के बीच की खाई बहुत तेजी से गहरी होती जा रही है।इस संकट से निकलने के लिए हमे विदेशी पूँजी और निर्यातोन्मुखी विकास के दुःचक्र से बाहर निकलना होगा। इसके लिए विकास की पूरी दिशा और अर्थव्यवस्था को बदलना होगा ।स्वावलंबन, सादगी, और समता को प्रमुख सूत्र बनाना होगा, “बाहर देखूं विकास की जगह भीतर देखू"[14] विकास के बारे में सोचना होगा।आम जनता की बुनियादी जरूरतों कोबपुर करने को अर्थनीति व नियोजन का लक्ष्य बनाना होगा। खेती, पशुपालन, छोटे व श्रमप्रधान उधोगो तथा प्रकृति से मेलजोल रखने वाली टेक्नोलॉजी के विकास को प्राथमिकता देनी होगी।

निष्कर्षत:

यह कहा जा सकता है कि बिहार में वैश्विकरण का साकारात्मक और और नाकारात्मक प्रभाव बिहार के लिए

चुनौती पूर्ण है।लेकिन बिहार में वैश्विकरण के साकारात्मक रूप को स्वीकार करने से बेहतर मार्ग का निर्माण होगा। क्युकी इसने लोगो के सभी पक्षों को प्रभावित किया है।भौगौलिक सीमाएं एवम अन्न सभी सीमाओं का उन्मूलन कर समाज को वसुधैव कुटुंब की ओर अग्रसर किया है।

सन्दर्भ:-

1. शैला. एल. क्रोचर “वैश्विकरण और सम्बन्ध”, (एक बदलती हुए दुनिया की पहचान की राजनीति), रोमन और लिटिलफ्लिड, संकरण-2004, पृ.स. -10

2. चंडोक नीरा "ए नेशन सर्चिंग ऑफ़ ए नेरोटिव इन टाईम्स ऑफ ग्लोबलाइजेशन, इकोनॉमिक् एंड पोलटिकल वीकली,"। संस्करण- 1मई, 1999, पृ. स. -1014

3. रजनी कोठरी, जाति के भूमंडलीय पहलू, “आधुनिकता के आईने में दलित,” वाणी प्रकाशन--2005, पृ.स.--393

4 मिश्र गिरीश एवम पाण्डेय ब्रज कुमार, “भूमंडलीकरण मिथक या यर्थात”, पृ.स.--9

5. पाण्डेय डॉ0 वी0 के0, “वैश्विकरण के विविध आयाम,” प्रकाशन --शरद पुस्तक भवन, इलाहाबाद, संस्करण--2008,पृ0 स0--आमुख।

6. शिवदयाल, “बिहार की विरासत,” प्रकाशन--वाणी प्रकाशन, संस्करण-2006, पृ.स.-46

7. “बिहार सरकार की योजनाओं की सूची” जून 27, 2018

8. प्रभात खबर, संस्करण --मोतीहारी। दिनांक-- 14.09-2020

9. डॉ0 ठाकुर अनिल, "बिहार काआर्थिक आंकलन” प्रकाशन--मिनाक्षी, संस्करण--2008 पृ0स0-35

10. "मिश्र गिरीश्वर संदेश, भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में साहित्य, समाज संस्कृति और भाषा,प्रकाशन-सरस्वती प्रकाशन, संस्करण--2016, पृ.स.-9

11. “भूमंडलीकरण और सामाजिक परिवर्तन” पृ.स.--107

12. डॉ0 प्रसाद प्रधान हरिशंकर/डॉ0 दत्त मीरा, “वैश्विकरण की चपेट में बिहार”, प्रकाशन—बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, पृ0 ,स0 --प्रकाशकीय,संस्करण-2001.

13. डॉ. ठाकुर अनिल, बिहार का आर्थिक आकलन,प्रकाशन--मीनाक्षी प्रकाशन, दिल्ली। संस्करण-2008,पृ0स0-39

14. प्रभात खबर, “भूमंडलीकरण के चपेट में भारत” संस्करण--मुज़फ़्फ़रपुर, दिनांक-2 सितम्बर 2013

Corresponding Author

Dr. Soni Kumari*

PhD (Politic Science) B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur

www.ignited.in